संपादकीय

बीते दिनों एक ही दिन राजधानी के दो बिल्कुल ही अलग-अलग तरह के साहित्यिक कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिला।

इन दोनों कार्यक्रमों ने मुझे अलग-अलग तरीके से बेहद आंदोलित किया। अपना यह अनुभव मैं आपसे साझा करने से अपने को रोक नहीं पा रहा हूं, इसलिए संपादकीय के जरिए इसे आपको परोस रहा हूं।

'अर्ज किया है' नाम है प्रदेश के उच्च शिक्षित नौजवान साहित्यकारों के छोटे से अनूठे संस्थान का। इन्होंने पिछली दोपहरिया में बस्तर से मुझे 'गुरु' (मुख्य वक्ता) के रूप में आमंत्रित कर 'वर्तमान साहित्य एवं समाज' विषय पर लगभग एक घंटे का साक्षात्कार लिया। साक्षात्कार कर्ता थे लगभग 25 वर्षीय युवा गुंजन जी तथा सुधी श्रोताओं में वरिष्ठ साहित्यकार भाई राहुल सिंह जी (बहुचर्चित कृति 'फूफाजी' वाले) सहित नई पीढ़ी के विभिन्न विधाओं के दर्जनों सशक्त रचनाकार मौजूद थे। स्थान था, प्रदेश की राजधानी रायपुर के सबसे ज्यादा व्यस्ततम व्यवसायिक केंद्र 'सिटी सेंटर मॉल' का सबसे ऊपर वाले माले पर स्थित सभागार।

साक्षात्कार

परिस्थिति आदि की भिन्नता से हर जनजातीय समुदाय की अपनी विशिष्टताएं हैं

आदिवासी मुद्दों पर बारीकी से विशलेषण कर लेखन करने वाले जाने माने
लेखक **रणेन्द्र कुमार** से **कुसुमलता सिंह** की बातचीत

आदिवासी भाव भूमि पर लिखे गए अपने पहले उपन्यास 'ग्लोबल गांव के देवता' से ही रणेन्द्र कुमार हिंदी साहित्य जगत में चर्चा में आ गए। वर्तमान में वे झारखंड राज्य प्रशासनिक सेवा में कार्यरत हैं और इन दिनों डॉ. रामदयाल मुंडा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, रांची में निदेशक के पद पर हैं। नौकरी के सिलसिले में इन्हें अनेक आदिवासी समूहों के बीच रहने, घुलने-मिलने, सुख-दुख में भागीदार होने, उनके मूल्य व सूत्रों से अवगत होने का अवसर मिला। इस बीच इन्होंने आदिवासियों की विशिष्ट संस्कृति-समाज पर वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था के प्रभावों का गंभीरता से अध्ययन और चिंतन किया। इनके लिखे उपन्यास 'ग्लोबल गांव के देवता' और 'गायब होता देश' दोनों ही झारखंड के जनजातीय जीवन, संस्कृति और उनकी विशिष्ट समस्याओं पर केंद्रित हैं। इनकी कहानियों का संग्रह 'रात बाकी और अन्य कहानियां' तथा कविताओं का संग्रह 'थोड़ा सा स्त्री होना चाहता हूं' के नाम से प्रकाशित हैं।